

सत्र —2021—22
राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)
पाठ्यक्रम

Marking Scheme

Advance Diploma In Performing art (A.D.P.A.)
Vocal/Instrumental (Non percussion)
One Year Advance Diploma Course

PAPER	SUBJECT- VOCAL/INSTRUMENTAL (NON PERCUSSION)	MAX	MIN
1	Theory -1 Music –Theory	100	33
2	Theory -2 Applied principles of music	100	33
3	PRACTICAL- 1 Raga description viva	100	33
4	PRACTICAL- 2 Choice Raga Stage Performance	100	33
	GRAND TOTAL	400	132

Advance Diploma In Performing art (D.P.A.)
Vocal/Instrumental (Nonpercussion)
One Year Advance Diploma Course
सैद्धांतिक—प्रथमप्रश्नपत्र

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक: 100

1. ध्वनि (सांगीतिक ध्वनिऔर शारे), नादऔरउसकेप्रकार, नाद की तीव्रता, तारता।सेमीटोनमाईनरटोन, मेजरटोनकापरिचय।
2. हिन्दुस्तानीऔरकनार्टकस्वरसप्तकोंका अध्ययन।ग्रहआदिदसराग लक्षणोंकापरिचय।
3. गाधर्वगान एवंमार्ग—देशीकासामान्य परिचय।निबद्ध एवंअनिबद्ध गान की सामान्य जानकारी।
4. थाट, रागवर्गीकरणकासामान्य परिचय। शुद्ध, छायालग एवंसकीर्णरागोंका अध्ययन।
5. गणितानुसारहिन्दुस्तानीसंगीत पद्धति के 32 औरकनार्टकसंगीत पद्धति के 72 मेलों की निर्माणविधि। स्वरों की संख्या के आधारपर एक थाटसे 484 रागबनानेकीविधि।
6. ग्रामऔरमूर्च्छना के लक्षण एवंभदों की सामान्य जानकारी।
7. पं. विष्णुदिगंबरपलुस्करस्वरलिपि पद्धति की जानकारी।

Advance Diploma In Performing art (D.P.A.)

Vocal/Instrumental (Nonpercussion)

One Year Advance Diploma Course

सैद्धांतिक—द्वितीय प्रश्नपत्र

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक: 100

1. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय एवं पिछले पाठ्यक्रम के रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन :—राग—छायानट, जयजयवंती, बसंत, कामोद, शंकरा, देशकार, बहार, कालिंगडा, सोहनी।
2. निम्नलिखित अ एवं ब को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास।
(अ) पाठ्यक्रम के किन्हीं 5 रागों में विलंबित रचना (बड़ा ख्याल),
मसीत खानीगत को आलाप तानों सहित लिखने का अभ्यास। किसी ध्रुपद अथवा धमार को दुगुन,
चौगुन सहित लिखना अथवा किसी तराने को लिखने का अभ्यास।
(ब) पाठ्यक्रम के रागों में से मध्यलय रचना (छोटा ख्याल),
रजा खानीगत को स्वरताल लिपि में लिखने का अभ्यास। (आलाप, तानों सहित।)
(स) किसी भजन अथवा धुन को तालस्वरलिपि को लिखना।
3. आड, कुआड, बिआड, की परिभाषा एवं अर्थ। तीन ताल, दादरा, कहरवा, झपताल, एकताल के ठेकों को आड, कुआड, बिआड की लयकारी में लिखने का अभ्यास।
4. संगीत से संबंधित विविध विषयों पर लगभग 400 शब्दों में निबंध लेखन।
5. जीवन परिचय एवं सांगीतिक योगदान :—सदारंग—अदारंग, बाबाउस्ताद अलाउद्दीन खॉं, पं. राजा भैया पूछवाले, पं. ओमकारनाथ ठाकुर, पं. रविशंकर, उस्ताद बिस्मिल्लाह खॉं, डॉ. एन. राजम।
6. भजन, गीत, गजल, होरी, चैती आदि गीत प्रकारों

Vocal/Instrumental (Nonpercussion)
One Year Advance Diploma Course

प्रायोगिक :- 1 प्रदर्शन एवंमौखिक

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक: 100

1. पूर्वपाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवंपाठ्यक्रम के राग : छायाणट, जयजयवंती, बसंत, कामोद, शंकरा, देशकार, बहार, कालिंगडा एवंसाहेनी।
2. पाठ्यक्रम के रागोंमेंस्वरमालिका एवं लक्षणगीतकागायन। (गायन के परीक्षार्थियों के लिये।)
3. पाठ्यक्रम के किन्हीं 5 रागोंमेंविलंबितरचना (बडा ख्याल), विलंबितगत (मसीतखानी) काआलापतानोंसहितप्रदर्शन।
4. पाठ्यक्रम के 7 रागोंमें मध्यलय रचना (छोटा ख्याल), मध्य लय गत (रजाखानी) कातानोंसहितप्रदर्शन।
5. पाठ्यक्रम के किसी एक रागमें ध्रुपदअथवा धमार (दुगनु, तिगुन, चौगुनसहित प्रदर्शन।) दोतराने एवं एक भजन की प्रस्तुति। (गायन के परीक्षार्थियों के लिये।) अपने वाद्य परतीनताल के अतिरिक्तअन्य किसीतालमेंदोगतोंकाप्रदर्शनतानोंसहित।किसी धुनकाप्रदर्शन (वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये)।
6. पाठ्यक्रम के तालोंकाहाथसेतालीदेकरठाह, दुगनु, तिगुन, चौगुनसहितप्रदर्शन।

Advance Diploma In Performing art (D.P.A.)

Vocal/Instrumental (Nonpercussion)
One Year Advance Diploma Course

प्रायोगिक :- 2 मंचप्रदर्शन

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक: 100

1. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से किसी एक राग का प्रदर्शन।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से परीक्षक द्वारा पूछे गए किसी एक राग की प्रस्तुति।
3. ठुमरी, टप्पा, त्रिवट अथवा भजन की प्रस्तुति। किसी धुन अथवा त्रिताल के अतिरिक्त अन्य किसी ताल में द्रुत गत का प्रदर्शन। (वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये।)

संदर्भग्रंथ:

- | | | |
|---|---|----------------------------|
| 1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 | — | पं. विष्णु नारायण भातखण्डे |
| 2. संगीत प्रवीण दर्शिका | — | श्री एल. एन. गुणे |
| 3. संगीत शास्त्र दर्पण | — | श्री शांति गोवर्धन |
| 4. संगीत विशारद | — | श्री लक्ष्मी नारायण गर्ग |
| 5. सितार मालिका | — | श्री भगवत शरण शर्मा |
| 6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 | — | पं. श्रीरामाश्रय झा |
| 7. संगीत बोध | — | श्री शरद चन्द्र परांजपे |
| 8. संगीत वाद्य | — | श्री लाल मणि मिश्र |
| 9. हमारे संगीत रत्न | — | श्री लक्ष्मी नारायण गर्ग |